19 / 03 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

विश्व राज्य-अधिकारी होने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा स्वराज्य अधिकारी हूँ...

➳ _ ➳ अपने मस्तक सिंहासन पर विराजमान मैं आत्मा राजा

➳ _ ➳ अपने स्वराज्य दरबार को देख खुश हो रही हूँ..

→ मेरी स्थूल और सूक्ष्म कर्मेन्द्रियाँ

■ आर्डर प्रमाण चल रही हैं..

➳ _ ➳ मेरा मन मंत्री-

→ सदा अंतर्मुखता के सिंहासन पर

■ विराजमान रहता है..

➳ _ ➳ मेरा बुद्धि रूपी सेनापति-

→ सदा ज्ञान तलवार में योग का जौहर भरकर

■ एवररेडी रहता है..

→ सदा नालेजफुल रहकर

■ रावण को नजदीक भी नहीं आने देता है..

→ रावण के बहुरूपों को अच्छी तरह से जान

■ चाहे सोने का, चाहे हीरे का रूप धारण करे,

■ रावण की अट्रैक्शन में कभी नहीं आता है..

➳ _ ➳ मेरे स्वभाव-संस्कार रूपी सैनिक-

→ सदा श्रीमत की लकीर के अन्दर ही रहते हैं..

→ दैवीय गुणों और शक्तियों के शस्त्रों से

■ पुरानी आदतों और संस्कारों को

■ सदैव के लिए नष्ट कर दिए हैं..

→ सदा मर्यादा पुरुषोत्तम का कवच पहने रहते हैं..

➳ _ ➳ मेरे कर्मेन्द्रियों रूपी पांच द्वारपाल-

→ मेरे नेत्र सदा ही

■ भाई-भाई की दृष्टि रखते हैं..

→ मेरे कान सदा

■ सत्य बाप के सत्य वचन ही सुनते हैं..

→ मेरी नासिका सदा

■ रूहानियत की खुशबू ही ग्रहण करती है..

→ मेरी जिह्वा सदा

■ सात्विकता में ही रूचि लेती है..

→ मेरा स्पर्श सदा

- शुद्ध भावना से युक्त होता है..

➳ _ ➳ मेरी प्रजा रूपी हाथ और पैर-

→ मेरे हाथ सदा ही

- बाबा के कार्य कर रहे हैं..

→ मेरे पैर

- बाबा के क़दमों में कदम रख
- फालो फादर कर रहे हैं..

➳ _ ➳ रावण मेरे अधीन हो गया है..

→ प्रकृति के पांचों तत्व और पांचों विकार ट्रान्सफर होकर

- विशेष दिव्य गुणों के रूप में
- मेरी सेवा कर रहे हैं..

→ मैं आत्मा सदा स्व पर

- सुचारू रूप से राज्य कर रही हूँ..

→ कर्मेन्द्रिय जीत, मायाजीत बन रही हूँ..

→ मैं आत्मा अभी भी राजा हूँ

- भविष्य में भी राजा बन रही हूँ..

➢➢ मैं विश्व कल्याणकारी, विश्व राज्य अधिकारी आत्मा हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा बापदादा की राईट हैण्ड हूँ...

→ बाबा ने मुझे राइट हैण्ड बनाकर

- मेरे हाथ में राज्य भाग्य का गोला
- गिफ्ट में दे दिया है..

→ मैं सदा बापदादा के डायरेक्शन प्रमाण

- हर संकल्प वा हर कदम उठा रही हूँ..

→ सदा शुभ चिंतक मणि बन चमक रही हूँ..

→ अपने पावरफुल वायब्रेशंस

- चारों ओर फैला रही हूँ..

→ परचिन्तन को तलाक देकर सदा

- स्वचिन्तन में डूबी रहती हूँ..

→ सदा सेवा के उमंग उत्साह में रह

- सर्विस कर रही हूँ..

→ अपनी सेवा समझ हर कार्य कर रही हूँ..

- बाबा की सेवा वा विश्व की सेवा
- ये मेरी सेवा है..

→ सदा बेहद की वृत्ति रख

- विश्व कल्याण कर रही हूँ..

→ बाबा के दिलतख्त पर बैठ रही हूँ..

➳ _ ➳ मैं आत्मा सदा निर्विघ्न सेवाधारी हूँ...

→ किसी भी संस्कार वा संकल्पों के विघ्नों को

- सेवा में रुकावट नहीं बनने देती हूँ..
- विघ्न विनाशक बन ख़त्म कर देती हूँ..

→ सदा सफलता स्वरूप सेवा कर रही हूँ..

→ अधिकारीपन के संस्कारों को

- अभी ही जमा कर रही हूँ..
- जो भविष्य में 21 जन्म चलेंगे..

→ मैं स्वराज्य अधिकारी

- विश्व कल्याणकारी बन
- विश्व राज्य अधिकारी बन रही हूँ..